पत्रकार गांधी

प्रो. रमेश जैन
पूर्व अध्यक्ष जनसंचार विभाग
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

गाँधी की भारत को स्वाधीन कराने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। गांधीजी पेशे से वकील थे, लेकिन उन्होंने अपना आंदोलन चलाने के लिए पत्रकारिता को मुख्य आधार बनाया। पत्रकारिता और अखबारों की महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य भूमिका को गांधीजी ने अच्छी तरह महसूस कर लिया था। उनके शब्दों में "मेरा ख्याल है कि ऐसी कोई भी लड़ाई जिसका आधार आत्मबल हो, अखबार की सहायता के बिना नहीं चलाई जा सकती। अगर मैने अखबार निकालकर दक्षिण अफ्रीका में बसी हुई भारतीय जमात को उसकी स्थिति न समझाई होती और दुनिया में फैले हुए भारतीयों को दक्षिण अफ्रीका में क्या कुछ हो रहा है, इसे 'इण्डियन ओपिनियन' के सहारे अवगत न कराया होता तो मैं अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकता था। इस तरह मुझे भरोसा हो गया है कि अहिंसक उपायों से सत्य की विजय के लिए अखबार एक बहुत ही महत्वपूर्ण और अनिवार्य साधन है।"

इंडियन ऑपिनियन

महात्मा गांधी जब नेटाल में थे और गोरे लोगों के रंगभेद के विरूद्ध लड़ रहे थे तो उन्होने 'इण्डियन ओपिनियन' की स्थापना की। 4 जून, 1903 को चार भाषाओं में 'इण्डियन ओपिनियन'

साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया जिसके एक अंक में हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती और तमिल भाषा में छह कालम प्रकाशित होते थे। उन्होंने एक प्रेस भी डाल लिया। श्री मनसुख लाल नाजर संपादक और मदनजीत 'व्यावहारिक' गांधी जी के सहायक संपादक थे। मदनजीत मुंबई के रहने वाले थे और उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी के साथ राजनीतिक क्षेत्र में काम किया था।

'इंण्डियन ओपिनियन' के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए गांधी जी ने लिखा –"पत्र की नीति इस उपमहाद्वीप में भारतीयों के हित को संसार के सामने उपस्थित करना है। किंतु हम कह देना चाहते हैं कि पत्र केवल भारतीय समाज के अधिकार की ही बात नहीं करेगा वह एक बड़े और विशाल साम्राज्य में उसके क्या कर्त्तव्य है, यह बताने में भी कभी किसी प्रकार की आनाकानी नहीं करेगा।"

भारत की सांस्कृतिक चेतना तथा परम्पराओं को भी गांधी जी ने इस पत्र के माध्यम से उद्घाटित किया। यह पत्र प्रारम्भ से ही घाटे में चलने लगा। कालान्तर में हिंन्दी एवं तमिल भाषा के भाग बंद कर दिए गए थे क्योंकि इन भाषाओं में लेखक बड़ी कठिनाई से मिला करते थे। इसमें संपादकीय आदि लिखने का अधिकांश काम गांधी जी करते थे। हिन्दी का लेखन सन् 1903 से लेकर 1914 तक गांधी जी ने किया। वे देश और दुनिया के बड़े–बड़े आदमियों पर केवल टिप्पणियां ही नहीं लिखते थे, उन पर लेख भी लिखते थे। टालस्टाय, लिंकन, मेजिनी, एलिजाबेथ, फ्राई, फ्लोरेंस नाइटेंग्लस जैसे प्रसिद्ध व्यक्तियों के संबंध में लिखने के अतिरिक्त उन सत्याग्रहियों के जीवन के बारे में लिखा जिन्होंने दक्षिण अफ्रीका के संघर्ष में जान और माल का नुकसान उठाया।

सन् 1909 में गांधी जी को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उन्होंने पत्र का आकार बदल दिया, टिप्पणियां संक्षिप्त कर दी और बाहर से आने वाले समाचारों को बहुत काट–छाटकर और छोटा बनाकर छापने लगे। उन्होंने लिखा कि अब हमारी सारी शक्ति हमे संक्षिप्तीकरण में लगानी चाहिए। संपादन में संक्षिप्तीकरण का कितना योगदान हो सकता है, इसे 'इंडियन ओपिनियन' के सन् 1910 से लगातार 1914 तक के अंक प्रदर्शित करते हैं। आगे चलकर हिन्दी एवं तमिल के स्तम्भों को देना बंद कर दिया और पत्रिका केवल अंग्रेजी और गुजराती में नियमित सामग्री देती रही। आर्थिक कष्टों में पड़कर गांधी जी ने पत्र के स्वामित्व को बदलकर उसे ट्रस्ट का रूप दे दिया।

सन् 1914 में गांधी जी भारत आ गए और उन्होंने पत्र–प्रकाशन की योजना बनाई। उन दिनों प्रत्येक समाज सुधारक और नेता अपने विचारों के प्रचार के लिए पत्र–पत्रिका प्रकाशित किया करते थे। राजाराम मोहन राय से लेकर केशवचंद्र सेन, गोखले, तिलक , फिरोजशाह मेहता, दादाभाई नौराजी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, सी.वाई.चितांमणि आदि सभी ने अपने–अपने अखबार निकाले। उस समय श्रीमती एनी वीसेंट का 'न्यू इंडिया', मौलाना मोहम्मद अली का 'उर्दू' साप्ताहिक, मौलाना, अब्दुल कलाम आजाद का 'अल हिलाल, लोकमान्य तिलक का 'केसरी' और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी 'बंगवासी' आदि पत्र निकल

रहे थे।

एक पृष्ठ का बुलेटिन'सत्याग्रह'

गांधी जी के पास अनेक पत्र–पत्रिकाओं के संपादन का भार ग्रहण करने के प्रस्ताव आए। उनहोंने सभी प्रस्ताव अस्वीकार कर दिए। प्रसिद्ध समाचारपत्र 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के संपादक पद को भी गांधीजी ने अस्वीकार कर दिया। मुबंई से 7 अप्रेल, 1919 को 'सत्याग्रही' नाम से एक पृष्ठ के बुलेटिन को निकालना प्रारम्भ किया जो मुख्यतः अंग्रेजी में और अंश हिन्दी में था। इसका उन्होंने कोई *डिक्लेरेशन* नहीं दिया और इसलिए इसका कोई चंदा भी नहीं रखा। 'सत्याग्रही' के प्रकाशन पर गांधी जी ने कहा कि "हम इस बात का कोई यकीन नहीं दिला सकते कि अखबार नियमित रूप से निकलता रहेगा, क्योंकि संपादक के किसी भी क्षण गिरफ्तारी की संभावना हैं। किन्तु हम इस बात की जरूर कोशिश करेंगे कि एक सम्पादक की गिरफ्तारी के बाद दूसरा संपादक इसकी जिम्मेदारी लेता जाए । इसे हम यथासंभव तब तक चलाते रहेंगे जब तक रौलट एक्ट वापस नहीं ले लिया जाता है।"

नवजीवन

'सत्याग्रही' में मुख्य रूप से सत्याग्रह के ही समाचार दिए जाते थे। 'सत्याग्रही' के बाद गांधी जी ने कुछ धनिक गुजरातियों की मदद से निकलने वाले साप्ताहिक अखबार 'यंग इंडिया' का संपादन अपने हाथ में लिया और जल्दी ही उसका संस्करण 'नवजीवन' नाम से जुलाई, 1919 में शुरू कर दिया। यह पत्र पहले मासिक रूप से निकला और फिर 7 अक्टूबर, 1919 को साप्ताहिक कर दिया गया। 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' दोनों पत्र बहुत लोकप्रिय हुए। सन् 1922 में कुछ संपादकीयों को लेकर गांधी जी पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें छह महीने का कारावास दिया गया। गांधी जी की गिरफ्तारी के बाद 'यंग इंडिया', 'नवजीवन' और 'हिन्दी नवजीवन' मृतप्राय हो गए। जेल से छूटने के बाद 3 अप्रैल, 1924 को इन साप्ताहिकों का प्रकाशन पुनः शुरू हो गया। दूसरी बार 3 नवम्बर, 1932 को गांधी जी असहयोग के अपराध में फिर से बदं कर दिया गए और जनवरी, 1935 में छूटे।

हरिजन

गांधी जी के मन में अस्पृश्यता का प्रश्न महत्व धारणा करने लगा और उन्होंने तीनों पत्रों का नाम बदलकर 'हरिजन' रख दिया। 8 मई, 1933 तक वे इन पत्रों को संपादन के मार्गदर्शन जेल से ही करते रहे। सितम्बर, 1933 में गांधीजी वर्धा आ गए और तब 'हरिजन' के तीनों संस्करण वहीं से निकलने लगे।

'हिन्दी हरिजन' के संपादन में अनेक व्यक्तियों का सहयोग रहा है। श्री महादेव देसाई, प्यारेलाल जी, श्री वियोगी हरि, श्री रामनारायण चौधरी, हरिभाऊ उपाध्याय, काशीनाथ त्रिवेदी, किशोर लाल मश्रवाला, काका साहेब कालेलकर आदि इस पत्र के सहयोगी थे। गांधी जी ने इन साप्ताहिकों के बारे में लिखा है कि – "ये समाचार पत्र नहीं हैं, विचार पत्र हैं और इनमें विचार एक ही व्यक्ति के

जाहिर किए जाते हैं। इसलिए जब तक मैं जिंदा हूँ महादेव या प्यारेलाल जी भी इनमें अपने मन की बात नहीं लिखेंगें।" इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'हरिजन' में जो कुछ भी प्रकाशित होता था वह गांधी जी के विचारों का ही रूपांतर होता था।

8 अगस्त, 1942 में गांधीजी की गिरफ्तारी के बाद 'हरिजन' बंद हो गया। सरकार ने आदेश दिया कि सन् 1933 से लेकर 1942 तक की सारी फाइलें नष्ट कर दी जाए। सन् 1944 में जेल से छूटने के बाद गांधी जी ने साढ़े तीन वर्ष के बाद फिर 'हरिजन' निकालना शुरू किया।

जुलाई, 1947 में गांधी जी ने सरदार वल्लभभाई पटेल को लिखा कि अब 'हरिजन' आदि पत्र बंद कर दिए जाने चाहिए, ऐसा मुझे लगता है। क्योंकि सरकार इस वक्त तुम्ही लोगों के हाथ में है। मुझे इसके विरोध में कुछ नहीं कहना चाहिए। मेरा मन सरकार के कामों के साथ नहीं है। अगर अखबार चलेगा तो मैं सरकार के खिलाफ लिखूंगा।" अंत के दिनों में गांधी जी बहुत ही कम लिखने लगे थे। अधिकांश उनमें उनके प्रार्थना प्रवचन ही रहते थे। इसके बाद गांधी जी नोआखाली चले गए और अखबार सहयोगियों के हाथ में रहा। 1 मई, 1947 को वे नोआखाली से दिल्ली वापस लौटे और उन्होंने कोई छह महीने के व्यवधान के बाद फिर 'हरिजन' में लिखना शुरू किया। किंतु 30 जनवरी, 1948 को तो वे हमारे बीच से चले ही गए।

विज्ञापनों के पक्ष में नहीं

गांधी जी ने जितने भी पत्र निकाले, सभी साप्ताहिक थे। संभवतः उन्होंने दैनिक समाचार पत्र की कभी आवश्यकता ही अनुभव नहीं की। आजकल की पत्रकारिता की तरह पैसा कमाना उनका लक्ष्य नहीं था। समाचारपत्रों में विज्ञापन देने के भी पक्ष में वह नहीं थे और उन्होंने जितने भी पत्र निकाले उनमें कभी कोई विज्ञापन नहीं निकाला। पत्र के लिए किसी से कर्ज लेना भी उन्हें पसंद नहीं था। ग्राहक संख्या बढाकर पत्र को स्वावलम्बी बनाना ही उनका लक्ष्य था। गांधी जी की मान्यता थी कि जो समाचारपत्र आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी नहीं है और जिसे विज्ञापनों का सहारा लेना पड़ता है, उसकों चलाने से कोई लाभ नहीं है।

गांधी जी का हिन्दी के प्रति अनुराग था और उसके प्रचार के लिए वह चिन्तित रहते थे। गांधी जी की भाषा के संबंध में पं. जवाहरलाल नेहरू ने ठीक ही लिखा है–" उनकी भाषा सादी, सरल और विषय संगत होती थीं। किसी भी अनावश्यक शब्द का प्रयोग वह शायद ही कभी करते थे। उनकी इस भाषा शैली की छाप उनके द्वारा संचालित–संपादित पत्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। उनका मानना था कि कठिन शब्दों का प्रयोग समाचारपत्रों में नहीं करना चाहिए। जिन शब्दों का अर्थ समझ में नहीं आता उनका अर्थ दूसरों से समझ लेना चाहिए।

'हिन्दी नवजीवन' के प्रथम संपादकीय में ही उन्होंने अपनी कठिनाइयों और मर्यादाओं पर प्रकाश डाला था। उन्होंने लिखा था – "यद्यपि मुझे मालूम है कि 'नवजीवन' को हिन्दी में प्रकाशित करना कठिन काम है, तथापि मित्रों के आग्रह से विवश होकर और साथियों के उत्साह से 'यंग इंडिया' का

हिन्दी अनुवाद निकालने की धृष्टता मैं करता हूं। हिन्दुस्तानी भाषानुरागी 'हिन्दी नवजीवन' में उत्तम प्रकार की हिन्दी की आशा न रखे।"

रचनात्मक कार्यक्रमों से संबंधित पत्र

गांधी जी का व्यक्तित्व बहुमुखी था। खादी, ग्रामोद्योग, बुनियादी शिक्षा, राष्ट्र भाषा प्रचार, महिला–सुधार, हरिजन सेवा और प्राकृतिक चिकित्सा उनके रचनात्मक कार्यक्रम के प्रमुख अंग थे। सन् 1923 में बापू ने साबरमती आश्रम, वर्धा से 'अखिल भारतीय खादी समाचार' निकाला। इसके बाद महाराष्ट्र चरखा संघ की ओर से सन् 1933 में वर्धा से 'महाराष्ट्र खादी पत्रिका' मासिक का प्रकाशन हुआ। जुलाई 1941 में सेवा श्रम आश्रम, वर्धा से श्री कृष्णदास गांधी के संपादकत्व में 'खादी जगत्' मासिक शुरू हुआ। गांधीवादी अर्थशास्त्री डॉ.जे.सी कुमारप्पा के संपादकत्व में जनवरी, 1937 में 'ग्रामोद्योग पत्रिका' (मासिक) का प्रकाशन शुरू हुआ।

गांधी जी नें 'बुनियादी शिक्षा' के रूप में शिक्षा–जगत् को एक नया विचार दिया। वर्धा के हिंदुस्तानी तालीमी संघ की ओर से सन् 1939 में एक मासिक पत्रिका 'नई तालीम' निकली। वर्धा से 'महिला आश्रम पत्रिका' (त्रैमासिक) भी संवत् 2002 विक्रमी की गांधी जयंती से प्रारम्भ हुई। राष्ट्रभाषा प्रचार के लिए स्वतंत्रता से पूर्व बापू ने जो योगदान दिया है, वह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। काका कालेलकर और श्री मन नारायण अग्रवाल के संपादकत्व में सन् 1939 में 'सब की बोली' मासिक पत्रिका निकाली।

राष्ट्र भाषा प्रचार–समिति, वर्धा ने 15 जून 1941 से 'राष्ट्रभाषा' मासिक का प्रकाशन प्रारम्भ किया। हरिजन सेवक संघ की ओर से सन् 1933 में 'हरिजन सेवक' का प्रकाशन शुरू हुआ। सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली की ओर से सन् 1940 में 'जीवन साहित्य' मासिक निकला।

भारत में 'सर्वोदय पत्रकारिता' को प्रारम्भ करने का श्रेय गांधी जी को ही है। कोई भी स्वस्थ पत्रकारिता 'सर्वोदय पत्रकारिता' है। गांधी जी के शब्दों में "पत्रकारिता एक सेवा है।" गांधीजी ने एक बार कहा था कि –"मेरी जिंदगी मेरा संदेश है।" इसलिए उन्होंने जब शब्दों के माध्यम से अपना संदेश देना तय किया तो उसे अपने जीवन का पर्याय बनाया। गांधी जी की सर्वोदय की कल्पना को मूर्त रूप देने के लिए गांधी सेवा संघ वर्धा द्वारा सन् 1939 में 'सर्वोदय' मासिका का प्रकाशन शुरू हुआ। गांधी जी के देहावसान के बाद आचार्य विनोबा भावे के मार्गदर्शन में सर्वोदय,भूदान, ग्रामदान आदि की जो गतिविधियां चल रही है, उनका प्रचार करने के लिए 'गांधी के पथ पर', 'भूदान यज्ञ,' 'ग्राम भावना,' 'ग्रामराज', 'शताब्दी संदेश,' आदि पत्र–पत्रकाओं का प्रकाशन हुआ।

पत्र–पत्रिकाओं के लिए आदर्श जरूरी

गांधीजी ने पत्र–पत्रिकाओं के सामने कुछ आदर्श रखे। वे चाहते थे कि विश्व की सभी पत्र–पत्रिकाएं इन आदर्शों को निभाकर निकले। जब उन्हें लगे कि किसी कारण से ये आदर्श निभाना कठिन हो रहा है तो वे बंद कर दी जाए।

वे जिन बातों को पत्र–पत्रिकाओं के लिए अनिवार्य मानते थे, उनमें सबसे पहली बात तो यह है कि कोई भी पत्र–पत्रिका के सामने कोई उदांत ध्येय होना चाहिये। केवल मनोरंजन या पैसा कमाने की दृष्टि से पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन अवांछनीय है। वे वाणी की स्वतंत्रता के पूरे पक्षपाती थे। साथ ही आत्म–संयम पर उनका बहुत अधिक जोर था। कोई ऐसी बात जिससे किसी भी प्रकार की शील, हानि होती हो, उनकी पत्रकारिता की परिधि में नही आती थी। पत्र–पत्रिकाऐं देश के शासन से भी अधिक शक्तिशाली है, इसलिए उन्हें अपनी शक्ति का उपयोग बहुत ही सावधानी से करना चाहिए। गांधी जी ने पत्रकारिता के कुछ मापदंड भी स्थापित किए है। उन्होंने लिखा है– "समाचारपत्र का एक उद्देश्य तो यह है कि वह जनता की भावनाओं को समझे और उसे अभिव्यक्त करे। दूसरा यह कि वह जनता में कु छ वांछनीय विचारों को जागृत करे और तीसरा यह कि जो आम दोष हो, उनका निर्भीकता से भंडाफोड़ करे।"

गांधी युग के पत्रों का योगदान

पत्रकार गांधी की पत्रकारिता का व्यापक प्रभाव उनके समय में प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं और पत्रकारों पर पड़ा है। गांधी जी स्वयं तो पत्रकार थे ही, उन्होंने देश के कई प्रमुख नेताओं को भी पत्रकार बना दिया। उनकी प्रेरणा से राजेन्द्र बाबू ने सन् 1920 में पटना के सर्चलाइट प्रेस से हिन्दी साप्ताहिक 'देश' का प्रकाशन शुरू किया। काशी के शिवप्रसाद गुप्त ने भी गांधीजी की प्रेरणा से सन् 1920 में दैनिक 'आज' की स्थापना की। श्री गणेश शंकर विद्यार्थी ने गांधीजी के भारत आगमन के एक वर्ष पूर्व सन् 1913 में 'प्रताप' प्रकाशित किया। श्री बनारसी दास चतुर्वेदी ने कलकत्ता से 'विशाल भारत' और अंबिकाप्रसाद वाजपेयी ने दैनिक 'भारतमित्र' तथा 'स्वतंत्र साप्ताहिक' का संपादन किया। श्री कृष्णदत्त पालीवाल ने आगरा से 'सैनिक' निकला। गांधी जी के नेतृत्व में चल रहे आंदोलन ने ही श्री हरिभाऊ उपाध्याय को सन् 1923 में 'मालव मयूर' निकालने के लिए प्रेरित किया।

असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन जैसे आंदोलनों ने अनेक प्रकार के समाचारपत्रों–पत्रिकाओं को जन्म दिया और पुराने पत्रों की दिशा बदल दी। कहा जा सकता है कि जलियांवाला बाग हत्याकांड और उस पर हुई गांधी जी तथा देश के नेताओं की प्रतिक्रिया ने समाचार पत्रों की दिशा बदल दी। राष्ट्रीय आंदोलन में जिन पत्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा उनमें मद्रास का 'हिन्दू' और 'स्वराज्य', बम्बई का 'बम्बई क्रोनिकल', 'बाम्बे सेटिनल,' गुजराती 'जन्मभूमि,' मराठी 'काल' और 'नवाकाल', दिल्ली का 'हिन्दुस्तान टाइम्स', 'हिन्दुस्तान', और स्वामी श्रद्धानंद द्वारा स्थापित 'विजय', 'अर्जुन', वीर अर्जुन' तथा मालवीय जी द्वारा स्थापित 'नवयुग', कलकत्ता का 'भारतमित्र', नागपुर का 'नवभारत', राजस्थान का 'राजस्थान केसरी', त्यागभूमि', 'प्रजासेवक' और 'नवज्योति' (अजमेर), नई दुनिया (इंदौर) आदि उल्लेखनीय है। इन सभी पत्रों ने भारतीय राष्ट्रीयता और स्वाधीन चेतना को विकसित किया और जोखिम उठाए। इनके संपादकों को जेल जाना पड़ा, प्रेस जब्त कर लिए गए, जमानते मांगी गई और यदि

जमानते नहीं दी गईं तो समाचारपत्र बंद कर दिए गए।

गांधीयुग (सन् 1920–1947)

बहुत ही कम लोग जानते होंगे कि हिन्दी–पत्रकारिता में जो काल–विभाजन किया गया है, उसमें सन् 1920 से 1947 तक का युग 'गांधी युग' कहा जाता है।[1] इन 27 वर्षों में गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम और असहयोग आंदोलन के प्रचार के लिए देश में अनेक दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्रों का प्रकाशन हिन्दी में प्रारम्भ हुआ। हिन्दी पत्रकारिता की स्वस्थ एवं पुष्ट परम्परा की भूमि इस काल में दृढ़ हुई। इस युग की पत्रकारिता पर गांधी जी का विशेष प्रभाव रहा।

श्री रामनारायण चौधरी ने 'गांधी युग' के संदर्भ में लिख है– "गांधी युग के दौरान अधिकांश समाचार पत्र राष्ट्रीयता की भावना से भरपूर निकलने लगे थे तथा गांधी जी की नैतिक प्रेरणा और उनके स्वयं के प्रभाव से उक्त पत्रकारों ने अपने लिए आचार–संहिता भी स्वंय निर्धारित कर ली थी।"[2]

गांधी जी का पत्रकार एवं संपादक के रूप में आज भी वास्तविक एवं शोधपरक मूल्याकंन नहीं हुआ है। उनके राजनीतिक मूल्यों और विचारधारा पर ही बहुत अधिक कार्य हुआ है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम गांधी जी के 'पत्रकार' एवं 'संपादक' को नए आयाम में देखे और परिभाषित करें। उन्होंने पत्रकारिता के जो आदर्श बताएं हैं और अपने जीवन–काल में स्थापित किए है, उनका अनुसरण करें। वरिष्ठ पत्रकार एम. चेलापतिराव ने गांधीजी को महान पत्रकार माना है। उनके शब्दो में – "गांधीजी शायद सबसे महान् पत्रकार हुए हैं और उन्होंने जिन साप्ताहिकों को चलाया और संपादित किया वे संभवतः विश्व के सर्वश्रेष्ठ साप्ताहिक पत्र है।"

1. हिन्दी पत्रकारिता : इतिहास एवं संरचना, प्रो. रमेश जैन।
2. गांधीमार्गी पत्रकारिता के करिश्में – मेरे संस्मरण, रामनारायण चौधरी, प्रकाशकीय।